श्रद्धा के पुष्प पत्र

तालिब चकवाली
बी०ए० (आनर्ज) एल एल० बी०

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आर्य समाज के संस्थापक व युग प्रवर्तक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

बलिदान शताब्दी (१९८४) के उपलक्ष्य में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्रद्धा के पुष्प-पत्र

श्रद्धा के ये पुष्प पत्र ऋषिवर करो कबूल
'तालिब' अर्पण कर रहा भावना के ये फूल
भावना के ये फूल हैं रखिये अपने पास
इनमें सत्य का रंग है भक्ति की बू बास

मनोहर लाल कपूर
('तालिब' चकवाली)
बी. ए. (आनर्स) एल. एल. बी.

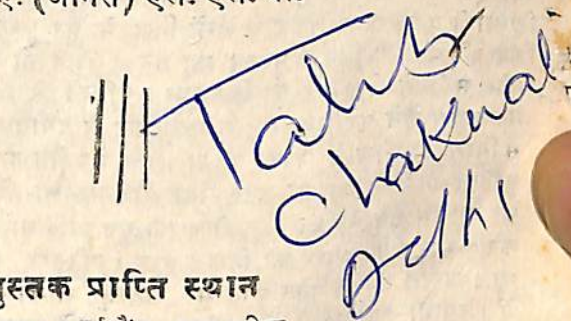

पुस्तक प्राप्ति स्थान
मैनेजर, नार्दर्न इण्डस्ट्रीज
राजगुरु रोड, न्यू दिल्ली-११००५५

कीमत २ रुपये

प्रथम बार ३०००
१९८४

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दो शब्द

यह छोटी सी भूमिका उन सज्जनों को आवश्यक जानकारी देगी जो आर्य समाज और इसके काम से भली भांति परिचित नहीं। यह उन आर्य समाजियों के लिये भी लाभदायक होगी जिन्हें इन बातों की ओर ध्यान देने की फुरसत नहीं मिलती।

गुजरात काठियवाढ़ में एक गांव टंकारा नाम का है। इस गांव में सन् १८२४ ई० में एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाम मूल शंकर रखा गया। मूलशंकर की उम्र १३ वर्ष की थी जब सन् १८३७ की ऐतिहासिक शिवरात्रि आई उसके पिता और दूसरे लोगों ने शिवरात्रि का व्रत रखा और मूल शंकर ने भी। उसके पिता की आज्ञा थी कि रात भर पूजा में जागते रहने से शिवजी महाराज के साक्षात दर्शन होते हैं। आधी रात होते होते आहिस्ता आहिस्ता सभी भक्त ऊंघने लगे। लेकिन मूल शंकर ने आंखें न झपकाईं। उसने देखा कि एक चूहा शिवजी महाराज की मूर्ति पर चढ़कर फल आदि खाने लगा। उस बालक के मन में प्रश्न पैदा हुआ कि यह सर्व शक्तिमान भगवान नहीं हो सकते जो एक चूहे को ऐसी हरकत न करने से मना नहीं कर सकते। यह सवाल एक चिन्गारी बनकर मूलशंकर के नन्हें दिल में हर वक्त रहने लगा। वह असली शिव की खोज में निकल पड़ा। यह सन् १८४४ की बात है। वह लाखों कष्ट और मुसीबतें झेल कर काशी पहुंचा। पंडितों से धर्म ग्रन्थ पढ़े। सन् १८५७ में संन्यास लेने पर उनका नाम मूलशंकर से दयानन्द रखा गया। सन् १८६० में विद्या की खोज में मथुरा पहुंचा। एक नेत्रहीन दण्डी संन्यासी विरजानन्द की कुटिया का दरवाजा जा खटखटाया और उनका शिष्य बन कर वेदों शास्त्रों की तालीम सन् १८६३ में पूरी करके गुरु दक्षिणा में अपना जीवन गुरु अर्पण करके भारत के उद्धार को निकल पड़ा। हरिद्वार में कुम्भ का मेला लग रहा था। भारत वर्ष के कोने कोने से श्रद्धालु लाखों की संख्या में वहाँ पहुंचे हुए थे। स्वामी दयानन्द ने भी वहां जाकर अपनी पाखण्ड खंडिनी पताका लहराई और अकेली जान ने अन्धविश्वास की फौजों को ललकारा। इस सत्य प्रेम और सत्य के प्रचार में उनको लाखों कष्ट और अत्याचार सहने पड़े और आखिर सन् १८८३ में दिवाली वाले दिन अपने प्राण यह कहते हुए, 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की" अपने प्राण अजमेर में त्याग दिए। उनको मुखालिफों ने जहर दिलवा कर निर्वाण का पद दिलाया।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उन्होंने आर्य समाज की स्थापना सन् १८५७ में बम्बई में की। फिर सन् १८७७ में लाहौर और सन् १८७८ में मेरठ आर्य समाज की स्थापना हुई। अपने विचारों के प्रचार के लिए उन्होंने कई ग्रन्थ रचे। उनमें सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका आदि विशेष महत्त रखते हैं और उनके कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

आर्य समाज ने स्त्री जाति को तालीम, विधवा विवाह अछूतोद्धार और दूसरे सामाजिक विषयों पर ध्यान दिलाया। स्कूल, कालेज और गुरुकुल खोले। देश की जुबान हिन्दी भाषा को माना और इसका प्रचार किया। स्वदेशी और स्वराज्य का नाद इसी के जन्म दाता ने बजाया जो बाद में गुजरात के एक और सपूत महात्मा गाँधी ने अपनाकर देश को स्वतन्त्रता दिलाई। ऋषि ने हमें आजादी से सोचने की शक्ति दी। आर्य समाज के दस नियम हैं। इन दस नियमों पर कवितायें आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे। आर्य समाज का सिद्धान्त है कि ईश्वर एक है और सिर्फ एक। वह सर्व शक्तिमान है। वह सर्वव्यापक है। वह निराकार है, अजन्मा है। वह हम सबका हित चाहने वाला और ज्ञान देने वाला है।

इस किताब में दर्ज कवितायें पिछले साठ साल में आर्य समाज के सम्बन्ध में आने और उसके लिए काम करते हुए लिखी गईं जो समय-समय पर प्रकाशित होती रहीं या आर्य समाज के सालाना जलसों में पढ़ी जाती रहीं। अब सज्जनों की सेवा में संग्रह करके भेंट की जा रही हैं क्योंकि कई लोगों ने इसकी माँग की है। आशा हैं मेरी उम्र भर की मेहनत से सज्जन पुरुष लाभ उठायेंगे। यही मेरे लिए बहुत है। आर्य समाज और उसके जन्म दाता से सम्बन्धित कुछ महापुरुषों के विचार टाइटल के पृष्ठ ३ पर दर्ज हैं, पढ़कर लाभ उठाइये और आर्य समाज और इसके काम में सहयोग दीजिए और इसको बेहतर से बेहतर बनाने का यत्न कीजिए।

भवदीय,

मनोहर लाल कपूर
('तालिब' चकवाली)
जे-३२ लाजपत नगर-३
नई दिल्ली-११००२४
फोन-६२५८१४

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आर्य समाज के मायानाज शायर

श्री मनोहर लाल जी कपूर 'तालिब' चकवाली को हम पचास वर्षों से अधिक समय से जानते हैं। उनका कलाम शुरू से ही आर्य गजट के पन्नों की ज़ीनत बनता रहा है। आप का जन्म चकवाल जि० झेहलम (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ। शुरू से ही आप सुधारवादी विचारों के थे और आपका सम्बन्ध आर्य समाज से रहा। आप वर्षों आर्य समाज चकवाल के मंत्री और डी. ए. वी. हाई स्कूल चकवाल के साथ जुड़े रहे। पहले आप चकवाल में वकालत करते रहे। पाकिस्तान बना तो आप देहली आ गए और आर्य समाज चूना मण्डी के प्रधान और आर्य समाज अनारकली के अतरंग सदस्य और कानूनी सलाहकार रहे। आप उच्चकोटि के शायर हैं। अखिल भारतीय मुकाबले में आपकी नज़्म 'इत्तफ़ाक' (एकता) को गोल्ड मैडल का प्रथम पुरस्कार मिला। आप ने आर्य समाज के नियमों पर एक पुस्तक 'अनवारे हकीकत' लिखी। आपकी लिखी हुई पुस्तक 'बर्गे जर्द' पर यू० पी० उर्दू अकादमी ने एक हजार रुपये का इनाम दिया। इनके अलावा आपकी और बहुत सी रचनायें भी प्रसिद्ध हुईं।

अब आप 'श्रद्धा के पुष्प पत्र' नाम से यह पुस्तक हिन्दी में छपवा रहे हैं जिसका परिचय कराने में हमें बड़ी प्रसनन्ता हो रही है। आशा है कद्रदान सज्जन इस पुस्तक को मंगवाकर इससे लाभ उठायेंगे और यह पुस्तक हर घर और लायब्रेरी की ज़ीनत बनेगी।

—दुर्गादास
सम्पादक
आर्य गज़ट
नई दिल्ली-२

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गायत्री महामंत्र

ऐ प्रभु तू सर्वशक्तिमान है--तेज तेरा महरो-मह[1] की शान है।
सबका रक्षक और पालन हार तू—विश्व का आधार उसका प्रान है।
ज्ञान और बुद्धि अता करता है तू—तेरे बल से आत्मा बलवान है।
तू बचाता है हमें दुख दर्द से—हर घड़ी तुझको हमारा ध्यान है।
सुख की वर्षा रात दिन करता है तू—किस कदर हम पर तेरा एहसान है।
तेरे सुन्दर रूप पर मोहित हूं मैं—तुझ को अपना लूं यही अरमान है।
दिल में तेरी आरजू[2] पैदा हुई—यह भी तेरी देन तेरा दान है।
अपनी सेवा का मुझे सौभाग्य दे—मैं हूं निर्धन और तू धनवान है।
मैंने खुद को तेरे अर्पण कर दिया—भावना की और क्या पहचान है।
हदयाए[3] नाचीज़ है कर ले कबूल—इसमें तेरी शान मेरा मान है।
अपनी राह पर डाल मेरी अक्ल को—यह बेचारी मुफ्त में हैरान है।
ठीक हो बुद्धि तो सब कुछ ठीक है—वरना यह इन्सान ही हैवान है।
तेरी जानिब[4] हो मेरी बुद्धि का रुख—मांगता 'तालिब' यही वरदान है।

(बरगे ज़र्द)

---

१. सूरज और चांद २. चाह ३. तुच्छ भेंट ४. ओर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

विश्व-कल्याण

ओं सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्य्यं करवाव है।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषाव है। शांतिः शांतिः शांतिः।

—०—

हे प्रभू हम सब की रक्षा कीजिए।
दान हम को वीरता का दीजिए॥
पालन और पोषण करें हम सब का आप।
दूर हों हम सब के दुःख दर्द और ताप॥
बल करें प्राप्त और बनें बलवान हम।
तेजमय विद्या का पायें ज्ञान हम॥
स्नेह हो आपस में, सबसे प्रेम हो।
दिल में आने दे न कोई द्वेष को॥
शांति हो शांति हो शांति।
राह यही है विश्व के कल्याण को।

—मनोहर लाल कपूर
'तालिब चकवाली'

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

"दुआ"

तू ही सबका खालिक तू ही है खुदा, तू ही सबका मौला[1] तू ही आसरा।
तू वाली अमीरों गरीबों का है, तू ग़मखार आफत नसीबों का है।
दुआ बेजुबानों की सुनता है तू, सदा नीम[2] जानों की सुनता है तू।
हैं गुम करदा रह हम तू है रहनुमा, तू है ज़ुलमते शब में रौशन दिया।
शहनशाह का गरचे वाली है तू, मुहब्बत का लेकिन सवाली है तू।
मुहब्बत का बन्दा है होकर खुदा, मुहब्बत से बन्दों को बांधा हुआ।
तू बन्दों की उलफत से मशहूर है, तू मुख्तार है फिर भी मजबूर है।
मुहब्बत तुझे अपने बन्दों से है, मुहब्बत सी तुझ को नहीं कोई शै।
मुहब्बत हो इन्सां की मुझ को अता, यही तेरे 'तालिब' की है इलतजा।

(सालनामा बच्चों की दुनिया इलाहाबाद)

१. मालिक २. कमजोरों

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

"भजन"

कभी उसका नाम लिया तो करी जिसने इन्सान बनाया है।
जिसने तुम को विद्या बख्शी जिसने विद्वान बनाया है॥
जिसने तारे चमकाये हैं, जिसने सूरज को ज्योति दी।
जिसने इन्सान के सुख के लिये सारा सामान बनाया है॥
गुल, बूटे, दरिया, पर्वत और आकाश बनाये हैं जिसने।
इन्सान के रहने को जिसने सुन्दर यह मकान बनाया है।
जिसने तुमको दौलत दी है, उसके बन्दों को भूले हो।
कुछ उसकी राह में दिया भी करो जिसने धनवान बनाया है।
माया के फंदों में फंस कर भूले हो अपने मालिक को।
माया के छल बल ने तुमको कैसा नादान बनाया है॥
है मुश्किल काम उसे मिलना, मिल सकता है इन्साँ लेकिन।
इन्सान को खातिर काम जो मुश्किल था, आसान बनाया है।
धनमान को पाकर भूला है, उसको जिसने धनमान दिया॥
मूरख ने 'तालिब' देखो तो ईश्वर धनमान बनाया है॥

(आर्य गज़ट, रिफार्मर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तू कहाँ है ?

तुझे सहरा में, आबादी में ढूँढा, तुझे कुहसार में वादी में ढूँढा।
तुझे बस्ती में बरबादी में ढूँढा, गुलामी और आजादी में ढूँढा।

कहाँ है तू, कहाँ है तू, कहाँ है ?
बसाई दिल में बस्तो आरजू की, तेरी निस्बत हरेक से गुफ्तगू की।
तेरी दुनियाँ में हर सू जुस्तजू[1] की, तलाश ऐ यार तेरी कूबकू[2] की।

कहाँ है तू, कहाँ है, कहाँ है ?
गुले[3] तर में तुझे सूंघा न पाया, तुझे महताब[4] में देखा न पाया।
हसीनों[5] में तुझे ढूंढा न पाया, किया सब कुछ मगर असला[6] न पाया।

कहाँ है तू, कहाँ है तू, कहाँ है ?
सुनीं मैंने हदीसें[7] जिन्दगानी, कि तू बाकी है, यह दुनिया है फानी[8]।
हुई तसदीक ऋषियों की जबानी, गजब की है यह फिरदौसी[9] कहानी।

कि उन्वाँ[10] जिस का 'तालिब' तू कहाँ है

(आर्य गजट, प्रकाश, रिफार्मर)

१. खोज २. गली-गली ३. ताजाफूल ४. चांद ५. सुन्दरियों
६. हरगिज ७. जीवन कथा ८. नाशवान ९. स्वर्ग की १०. शीर्षक।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मेरा खुदा

तूफ़ाने मुश्कलात[1] में मुश्किल कुशा[2] है तू,
दर्देगमे[3] हयात के दुःख की दवा है तू।
पुर[4] पेच व खारदार[5] हैं राहें हयात की,
लेकिन है फिक्र क्या कि मेरा रहनुमा[6] है तू।
नाकाबिले[7] अबूर नहीं ग़म के मरहले,
मायूसियों की रात में रौशन दिया है तू।
ऐ रहमते तमाम[8] मुझे तुझ पै नाज़ है,
मुझ से गुनहगार का भी आसरा है तू।
क्या मेरी ख्वाहिशात[10] हैं क्या मेरे वलवले,
गहराइयों में दिल की है क्या, जानता है तू।
मेरी ज़रूरतों के मुताबिक तेरा करम[11],
मैं दामने सवाल हूं दस्ते सखा[12] है तू।
रखता है जो यकीन तेरे इलतफ़ात[13] पर,
उस लादवा मरीज़ के हक में शफ़ा है तू।
रख दूं उठा के ताक पै हुजत तबीब[14] की,
मेरे हरेक दुःख की मुकम्मल दवा है तू।
मुझ को यकीन है कि मुहाफिज़[15] है तू मेरा,
महफूज़[16] हर बला से हूं मेरा खुदा है तू।

(बर्ग सब्ज़)

---

१. कठिनाइयां २. कष्ट निवारक ३. जीवन के दुःख की पीड़ा ४. पेचदार ५. कांटों भरी ६. पथ प्रदर्शक ७. जो पार नहीं किये जा सकते ८. निराशा ९. दया वान भगवान १०. ख्वाहिशात (इच्छाऐं) ११. दया १२. देने वाला हाथ १३. मेहरबानी १४. वैद्य १५. रक्षक १६. सुरक्षित

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गीत

झूठा है संसार हरि से प्रीत लगा ले —प्रीत—
मतलब के हैं रिश्ते-नाते, मतलब के हैं यार—हरि से प्रीत—
यह दुनिया है झूठ की मण्डी, झूठ का है व्योपार—हरि से प्रीत—
इस दुनिया की प्रीत है झूठी झूठा इस का प्यार—हरि से प्रीत—
बन्दा बन उस परमेश्वर का, जिस का सब संसार—हरि से प्रीत—
उसके दर का भिक्षक बन जा, उसका खुला भण्डार—हरि से प्रीत—
सब जग का वह मालिक, पालक, सबका पालनहार—हरि से प्रीत—
सच्चे मालिक का बन 'तालिब' झूठा है संसार—हरि से प्रीत—

(आर्य गज़ट)

याचना

(एस. एम. फ्रेज़ियर की अंग्रेजी नज़्म के आधार पर)

मुझे काम करने को दे ऐ खुदा, मुझे तन्दरुस्ती भी करना अता।
मिले सादा चीजों में मुझ को खुशी, वह दे आंख जो हुस्न हो देखती।
जुबाँ दे जो सच बोलने पर मरे, वह दिल दे जो सब से मोहब्बत करे।
दलायल[1] का कायल[2] हो मेरा दिमाग, हो एहसास हमदर्दियों का चिराग
न आयें कभी दिल में बुग्जो हसद[3], न हो मेहरबानी की कोई भी हद।
समझ बूझ हो मेरी आली[4] निहाद, न बूए तक्कब्बुर[5], न खूए[6] इनाद।
हो दिन खत्म, तो हो मुय्यसर कताब, और इक दोस्त ऐसा मिले लाजवाब
मेरे साथ जो चुप का प्याला पिये, जो कैफे[7] खामोशी के सदके जिये।

(बर्गे ज़र्द)

१. दलीलें २. मानने वाला ३. ईर्ष्या ४. ऊँचे दर्जे की ५. गरूर की बू (घमंड की) ६. दुश्मनों की आदत ७. चुप की मस्ती।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मेरी दुआ

कभी मैं भी दुआ करता था जैसे,
किया करते हैं दुनियादार अकसर।
"मुझे हर काम में हो कामयाबी,
हमेशा साथ दे मेरा मुक्कद्दर।
खुदाया मुझ को जाहो[1] मनज़लत दे,
खुशी की हो मुझे दौलत मुय्यसर[2]।
मेरे औसाफ[3] की कायल हो दुनिया,
मेरा हर काम हो औरों से बेहतर।
मेरे कारे नुमायाँ की हो चर्चा,
मेरी अज़मत के किस्से हों जबां पर।"
दुआ कुछ और ही है आज मेरी,
रिवायत की डगर से है यह हट कर।
सिखा दे प्यार करना मुझको या रब,
करूँ मैं प्यार उनसे जो हैं अहकर[4]।
पकड़ लूँ हाथ उनका साथ दूँ मैं,
चला करते हैं जिनसे लोग बचकर।

---

१. उच्च पदवी २. प्राप्त ३. गुण ४. छोटे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गरीबों, बेनवाओं, गुमरहों का,
मेरे मौला! बना दे मुझ को रहबर।
थके हारे इरादों के चमन में,
खिलें फिर से उम्मीदों के गुलेतर।
उगें नगमात[5] वीराँ रास्तों में,
हुदी खाँ बन के चमकें माह ओ अख़्तर।
दुआ जो मैं किया करता था पहले,
खुला अब मुझ पै, थी बेकार यकसर।
जो थे मौहूम[6] खुशियों के खिलौने,
वह मैंने तोड़ डाले बन के पत्थर।
खिलौने से नहीं खेलूंगा मैं अब,
मुझे दरकार हैं असली जवाहर।
मेरी बस एक हो है अब तमन्ना,
हो मेरा प्यार एक शाखे समरबर[7]।
सिखा दे मुझ को सब से प्यार करना,
हो मेरा प्यार हर इक से बराबर।
मुझे हो प्यार करने का सलीका,
सिखा दे प्यार करना बन्दा परवर।
दुआ 'तालिब' की सुन ले प्यार दाता।
उसे तौफीके[8] गम खारी अता कर।

(बर्गे जर्द)

५. गीत ६. झूठे, बेबुनियाद ७. फल ८. गम खाने की शक्ति।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अमल का देवता

वकफ़े ताराजे खिजां था गुलशने हिन्दोस्तां,
छा रही थीं सर बसर बन कर घटा बरबादियां
किसमते अगियार थी या खंदाजन थी बिजलियां,
रश्के दोजख था हमारा गैरत ए बागेजनां।
जो चमन वाले थे कब उनको चमन का होश था,
होश था तन का न कुछ उनको बदन का होश था।
वह समझते थे खुदाओं से भरी है कायनात,
बे समझ उनकी परस्तिश में समझ बैठे निजात।
जीते जी मरना तसव्वुर कर लिया राज़े हयात,
जब थी यह हालत तो फिर कैसी सयात और क्या ममात।
सामने मौजे फना आती थी मुंह खोले हुए,
सर पै शहबाजे अजल पहुंचा था पर तोले हुए।
हाल था बेहाल लेकिन हाल से थे बेखबर,
अज़मते माज़ी का था किस्सा जबां की नोक पर,
थे कभी सेरे नगीं अपने बड़ों के बेहरो बर,
एहले आलम को सिखाते थे वही इलमो हुनर,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बादह ए गफलत की मस्ती से बहुत बदहाल थे,
फाका मस्ती ने किये खुशहाल यह कंगाल थे।
अब फना कर देंगे इनको, गैर थे ठाने हुए,
इनको बरबादी की दिल में मिन्नतें माने हुए।
हर तरफ फौजे हवादस बरछियाँ ताने हुए,
जो दयार ओ बाग थे इनके वह वीराने हुए।
गाफिलों के सर पै आ पहुंची थी, अफवाजे गनीम,
जाहिलों का ताजे सर होने को था ताजे गनीम।
इस पै भी उनको न कुछ एहसास पस्ती का हुआ,
मुर्दा ही थे जो न कुछ एहसास हस्ती का हुआ।
कब असर उन पर अयाँ गफलत परस्ती का हुआ,
कब असर उन पर किसी की चीरा दस्ती का हुआ।
आलमे बाला की रूहें देख कर घबरा गईं,
उनको गैरत आ गई, गुस्सा से वह थर्रा गईं।
रहमते बारी ने जो देखा तो आई जोश पर,
कर दिया उस काम पर मामूर इक ऐसा बशर।
जो फरिश्तों से निकोतर था खतर से बेखतर,
कौम की काया पलट दी उसने आकर सर बसर।
पाक तीनत नेक सीरत, साफ बातिन मर्द था,
आलम ओ आमिल था इन्सानों में बेशक फर्द था।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

फूंक दी मुर्दों में आकर रूह इन्सां कर दिया,
फिर दियारे मर्ग में हस्ती का सामां कर दिया।
इस खिजां दीदा चमन को गुल बदामां कर दिया,
क्या कहें कैसे हर इक मुश्किल को आसां कर दिया।

कर दिखाया उसने जो कहते थे हो सकता नहीं,
वह अकेला इतना कुछ कर लेगा, था किसको यकीं।
जब किया जौके अमल उसने रफीको रहनुमा,
जुलमतों में नूरे अलाह बन गया रौशन दिया।
उसका सीना नूरे वेदे पाक से पुरनूर था,
वह जहां में बन के आया था अमल का देवता।

वह समझता था कि दुनिया में अमल दरकार है,
ये वह शै है जिससे इन्सानों का बेड़ा पार है।
कोई माने या न माने उसके सब मशकर हैं,
थी जिया उसकी ही जिससे उनके दिल पुरनूर हैं।
उफ रियाकारी के हाथों किस कदर मजबूर है,
बात दिल की लब पै ला सकते नहीं माजूर हैं।

काम कहते हैं मगर उन के जबाने हाल से,
डर के जो कहते नहीं 'तालिब' जबाने काल से।

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दयानन्द तो था सदाकत का पैकर

न इज्ज़त की ख्वाहिश न ज़िल्लत की परवा,
न सरवत, न शौकत, न हशमत की परवा।
न थी उसको दुनियाए दौलत की परवा,
न थी उसको कुछ एहले सरवत की परवा।
जहां भर को राहे सदाकत दिखाई,
उसे थी जहां में सदाकत की परवा।
हटाया न उसने कदम राहे हक से,
न की एहले शर की शरारत की परवा।
वह चमका दिया बन के तारीकियों में,
उजाला किया, की न जुलमत की परवा।
न दावा किया उसने पैगम्बरी का,
उसे कब थी शाने रिसालित की परवा।
सदाकत थी सौ जान से उस पै सदके,
दयानन्द को थी सदाकत की परवा।
दया और आनन्द हो जो मुज्जसम,
उसे क्यों हो जबरो शकावत की परवा।
दयानन्द तो था सदाकत का पैकर,
सदाकत को क्या है बतालत की परवा।
सदाकत के तालिब को होती नहीं है,
हकीकत की खातिर, मुसीबत की परवा॥

(प्रकाश, ला

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

दया लादवा की दवाई हुई थी।

जहालत घटा बनके छाई हुई थी,
बतालत की हम पर चढ़ाई हुई थी।
अदू अपनी सारी खुदाई हुई थी,
क़ज़ा जान लेने को आई हुई थी।
मुसीबत ने महसूर हम को किया था,
जहालत ने मसहूर हमको किया था।
तबीयत ने मजबूर हम को किया था,
यगानों से अपनी जुदाई हुई थी।
न हम थे किसी के न कोई हमारा,
न कोई मुआविन न कोई सहारा,
यकीनन था गरदिश में अपना सितारा,
कि अपनों से अपनी लड़ाई हुई थी।
फना दायें बायें फना सामने थी,
फना की असीरी में अपनी बका थी,
कि बेकार यकसर दवा और दुआ थी,
दया ला दवा की दवाई हुई थी।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जहालत की जुलमत को तूने मिटाया,
जो सोए हुए थे, उन्हें फिर जगाया ।
जो भूले थे रह, उनको रस्ता दिखाया,
गजब की तेरी रहनुमाई हुई थी ।
मरीज़े फना को दवाए बका दी,
जहालत को गोली फ़ना की खिला दी ।
रहे मुस्तकीमें सदाकत दिखा दी,
कि रहमत तेरी चोट खाई हुई थी ।
कहें सच तो मुर्दों को तू ने जिलाया,
शिकारे फना को फना से बचाया ।
गरज़मंद झूठों को नीचा दिखाया,
तेरी इनसे ज़ोर आज़माई हुई थी ।
दिए हैं दिवाली के रौशन सितारे,
यह जलते थे उस शाम को भी बेचारे ।
यह हैं कर रहे सर हिला कर इशारे,
कि हम से बड़ी बेवफाई हुई थी ।
दयानन्द जिन पर निछावर हुआ था,
जिया जिनकी और जिनकी खातिर मरा था ।
इवज़ खूब खिदमत का उनसे मिला था,
भलाई के बदले बुराई हुई थी ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

था मये पंदार से मखमूर हर पीरो जवां,
एक बदमस्तों का डेरा था कि था हिन्दोस्तां,
ताक में था दुश्मनों का सरगना दौरे जमाँ,
चार सू नादानियाँ, कज फहमियां, बरबादियाँ,
इक तरफ वह शेर मर्द और इक तरफ आफाते दहर,
इक तरफ नूरे हदायत, इक तरफ जुलमाते दहर,
उफ कयामत की जहालत, उफ कयामत का जनूं,
हाय खुदबीनी के हाथों मुल्क और मिल्लत का खून,
उफ जहालत से हुई हालत जबूं से भी जबूं,
वाए कज फहमी का भी होता है क्या जालिम फसूं,
लाख समझाये कोई लेकिन समझ आती नहीं,
जो भले की बात हो जचती नहीं भाती नहीं,
अपना बेगाना नजर आता है, बेगाना कुछ और,
मैकदा ही घर नजर आता है, काशाना कुछ और,
काबा बुतखाना नजर आता है, बुतखाना कुछ और,
दीवाना कैस नजर आता है, दीवाना कुछ और

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जो हकीकत हो नज़र आती है सूरत ख्वाब की,
होती है मरगूब ए खातिर बेबसी अहबाब की,
करती है मामूर तब कुदरत कोई मर्दे खुदा,
जिसका सीना है चिरागे मारफत से पुर जिया,
जगमगा उठती है, उसके नूर से सारी फिजा,
दिल से उठ जाते हैं कज फहमी के पर्दे बरमला,
सामने आंखों के होती है हकीकत बेनकाब,
तूर ला सकता है क्या ऐसे मनाजिर का जवाब,
तेरी वह तालीम जिससे खुल गया सिर्रे हयात,
जिससे हम परवा हुए राजे जहां, राहे निजात,
जिससे रौशन हो गई अदहाम की तारीक रात,
जिसकी है मरहून ए मिन्नत, हिन्द क्या सब कायनात,
मानिये रमजे हकीकत सत्य का परकाश है,
इसके नूरे पाक से बातिल का पर्दाफाश है,
यह हकीकत के रुखे रौशन का अक्से अव्वलीन,
मर्दे हक गो की नवाए जाँ गुदाज़ो दिल नशीन,
नाहराए मर्दे मुजाहिद की सदाए आतशीं,
सुरमाये चश्मे हकीकत है बसीरत आफरीं,
सैरे गुलजारे माआनी से मुन्नवर कर नजर,
नशतरे जर्राह से हरगिज ना डर, हरगिज ना डर,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मखजने इल्म

(आर्य समाज का पहला नियम)

सब सत्य विद्या और जो पदार्थ सत्य विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

—०—

जिस तरह है नूर का मम्बा जहां में आफताब,
जिस तरह सर चश्मा हुस्नों जिया है माहताब,
खूनकी ओ फरहत का है मखजन दमे आबो हवा।
जिस तरह है मुनहसिर इसमार पर रस का मजा,
जैसे फूलों से है दुनिया में जहाने रंग ओ बू,
फैजे आबो बाद से होता है गुलशन सुरखरू,
यह जहाने रंगो बू यह बोस्ताने कायनात्,
रौशनी के दम से है जीनत दहे बागे हयात्,
रौशनी सूरज की है सारी हरारत का खुदा,
है हरारत दर हकीकत जिंदगी का आसरा,
रौशनी से और गर्मी से है जैसे जिंदगो,
जिस तरह पानी की हैं मरहूने मिन्नत ताजगी,
इस तरह हां जिस तरह चश्मा हकीकी इल्म का,
है वह ज़ाते पाक जिसको कहते हैं हम सब खुदा,
मादने इल्म ए दो आलिम है वही ज़ाते अलीम,
आप ही सब कुछ सिखाता है हमें अपना करीम,
इल्म से सीना हमारा करता है पुरनूर वह,
वादिए जुलमत को कर देता है कोहे तूर वह,
होती है इल्मो हुनर की इब्तदा उस जात से,
या कि जो कुछ जानते हैं इल्म की बरकात से,
इल्म या हर इल्म से मालूम हो सकता है जो,
उसका मखज़न तुम खुदा या ईश्वर को मान लो।

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मेरा खुदा

(आर्य समाज का नियम २)

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टि कर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

—०—

हस्तो ए मुतलक है वो कहते हैं जिसको ईश्वर,
राहते अब्दी है वो, उस पर फना का क्या असर,
शक्ल और सूरत की ज़ंजीरें नहीं उसके लिए,
मन्दिर और मूरत की तदबीरे नहीं उसके लिए,
हर जगह मौजूद है, वो सर्वशक्तिमान है,
है उसे मालूम सब कुछ सब का उसको ध्यान है।
आदलों का है वो आदिल रहम का है देवता,
गोरे और काले को है वो इक नज़र से देखता।
वो कभी पैदा नहीं होता कभी मरता नहीं,
इब्तदा उसकी नहीं और इन्तिहा उसकी नहीं।
उसका माज़ी, उसका मुस्तकबिल है उसका हाल है,
एक सूरत, एक रस रहता वो तीनों काल है।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ज़र्रेज़र्रे में समाई है वही ज़ाते लतीफ़,
पत्ते पत्ते में दिखाई है वही ज़ाते लतीफ़।
वाएसे तखलीके आलम मालिके हर दोसरा,
बे सरो साया हैं बन्दे वो है सब का आसरा।
उससे ख़ाइफ़ हैं मिलाइक और शैतां एक से,
जलके गिर पड़ते हैं उसके नाम से पर खौफ़ के।
जब न था कुछ भी तो उसका जलवाये अनवार था,
जब न कुछ होगा, तो वो होगा, जो है कायम सदा।
है वही मेरा खुदा हां है वही मेरा खुदा,
पूजने के है वो लायक जिसको हूं मैं पूजता,

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वेद-ए-पाक

(आर्य समाज का नियम ३)

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म हैं।

—०—

तुझे है तिलाशे हकीकत अगर,
तो हर रोज तू वेद का पाठ कर।
अगर तुझ को हक की है कुछ जुस्तजू,
तो पढ़ता नहीं वेद क्यों नेक खू।
रहे हक से गुमराह न होगा कभी,
तेरी वेद से हो अगर दोस्ती।
जमाना करे लाख कोशिश मगर,
न तुझ पर कोई होगा उसका असर।
रमूजे तरीकत का मादन है यह,
अलूमे हकीकत का मखज़न है यह।
जो पूछोगे उससे बतायगा यह,
जो शक होगा दिल में मिटायगा यह।
रहे हक का वाहद यह है रहनुमा,
मजाहिब की जुलमत में रौशन दिया।
कलम बेज़बां है, तो कासिर जबां,
बयां कैसे हों वेद की खूबियां
यही वेद विद्या का भण्डार है,
अलूमे हकीकी का सरदार है।
तेरा फर्ज पढ़ना पढ़ाना इसे,
तेरा फर्ज सुनना सुनाना इसे।
करे फर्ज जो ला गरज तू अदा।
तुझे बेखुदी में मिलेगा खुदा॥

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तलाशे हक

(आर्य समाज का नियम ४)

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए

—०—

सूरज कभी चलता नहीं, दरिया कभी थमता नहीं,
पारा कभी जमता नहीं, आशिक कभी थमता नहीं।
उसको है हरदम जुस्तजू, वो ढूंढता है चार सू,
दिलबर की है बस आरजू, दिलदार क्यों मिलता नहीं।
जूं काह को है कुहर बा, सीने से ले लेती लगा,
होने नहीं देती जुदा, वो भी जुदा होता नहीं।
ज़ज़्बे हकीकी को बता, फिर खिजर की हाजत है क्या,
है शौक जिसका रहनुमा, वह फेल हो सकता नहीं।
खुशबू की है आशिक हवा, फिरती है दर दर बरमला,
आशिक को है सब कुछ रवा, बेजा उसे बेजा नहीं।
ऐसे ही तालिब हक का भी, रखता है हक से दोस्ती,
वह दोस्ती है आशिकी, आशिक से कम रुतबा नहीं।
हर इक को लाज़िम है यही, हर दम तिलाशे रास्ती,
हो मुद्दाए ज़िन्दगी, उससे कोई आला नहीं।
मिल जाये हीरा आपको, और वह पड़ा कीचड़ में हो,
लोगे नहीं लोगे कहो, है कौन जो लेता नहीं।
हक ही से है शाने बशर, हक ही तेरे ग़म की सहर,
हक के लिए सीना सपर, तू किस लिए करता नहीं।
नाहक को 'तालिब' छोड़ दे, इस राह से मुंह मोड़ ले,
बस इससे रिश्ता तोड़ ले, हकदार क्यों बनता नहीं।
होकर रहे सत का अगर, छोड़े असत को सर बसर,
इन्सान बन जाए बशर, क्या जाने क्यों बनता नहीं।

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

राहे पुर खतर

(आर्य समाज का नियम ५)

सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।

—०—

तमाम कारोबार में धर्म पै ही नज़र रहे,
दुरुस्त न दुरुस्त, का धर्म पै ही हसर रहे।
कदम न डगमगाने पाए राहे हक से भूल कर,
यह रास्ता है पुर खतर, खबर रहे खबर रहे।
तलाशे गुल में जो रहे अकड़ से बागे दहर में,
तमाम उमर सरव की तरह से बे समर रहे।
तलाशे हक की हो अगर किसी के दिल में जुस्तजू,
तो बन के इस जहान में वो खाके रह गुज़र रहे।
गो खाके रह गुज़र को सब हो रौंदते हैं जेरे पा,
मगर वो यूं रहे कि खाक से भी हेचतर रहे।
हर इक कदम पै मुशकलों से वास्ता है जो उसे,
तो सहल हों यह मुशकलें धरम पै वो अगर रहे।
न कशमकश है कशमकश न ज़िन्दगी वबाले जाँ,
न आदमी को कुछ अगर ख्याले सीमोज़र रहे।
न तलख हक हो कुछ हो गर मआल पर तेरी नज़र,
जफ़ा कशी हो ग़म रुबा, निगाह में जो समर रहे।
तमीजे बातल और हक, हो शगल इक लतीफ़ सा,
धरम के हुकम से अगर कोई न बे खबर रहे।
खुशामदें बशर की क्या, खुशामदें खुदा की कर,
है कम खुदा से हक परस्त क्या जो हक निगर रहे।
धरम हो रहनुमा अगर हर एक काम में तेरा,
तो तुझ से हक परस्त को न फिर किसी का डर रहे।

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हमारा मुद्दा

(आर्य समाज का नियम ६)

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

—०—

समाज का है मुद्दा—जहान भर की बेहतरी,
हर इक बशर की हर तरह—हर एक शै पै बरतरी।
खुदा से बे नियाज हो, बशर तो वह बशर कहाँ,
जो अपनी जड़ से हो जुदा, रहेगा वो शजर कहाँ।
न कर सके मुकाबला, हवा को जो शजर नहीं,
मुहाल उसकी जिन्दगी, कि हाजते तबर नहीं।
समाज ने जनम लिया, था काम ही के वास्ते,
है काम उसका मुद्दा, मदाम आपके लिए।
न रूह की खबर थी कुछ, न होश तन बदन का था,
थीं मजलसी खराबियाँ, हमारे दागे बद नुमा।
समाज ने यह दूर कीं, समाज का यह काम था,
मफादे दहर के लिए, कि उसने था जनम लिया।

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मोहब्बत

(आर्य समाज का नियम ७)

सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वरतना चाहिए।

—०—

मोहब्बत है कयामे दहर की ज़ामिन जमाने में,
झलक उसकी नुमायाँ है फलक के दाने दाने में।
जमीं का ज़र्रा ज़र्रा कतरा कतरा आबे दरिया का,
कहानी उसकी कहता है निज़ामे शमसिये दुनिया।
हमें हर इक को लाज़िम है मोहब्बत से मोहब्बत हो,
खुदा को जिससे रग़बत हो हमें क्यों उससे नफ़रत हो।
जो इन्सानों में हो उलफत की यूं ही कार फ़रमाई,
नज़र आए जहाँ में हर तरफ उलफ़त के शहदाई।
कहीं फिरदौस से बढ़कर हमारा खाकदां हो फिर,
रहे बैतुलहज़न दुनिया न फिर बागे जनाँ हो फिर।
मोहब्बत कर मोहब्बत कर, जभी इरशाद होता है,
कि इसके दम से हर नाशाद भी दिलशाद होता है।
मोहब्बत कर हर इक से तू बमन्शाए धरम लेकिन,
करेगा यूं तो हो हानि कोई तुझको नहीं मुमकिन।
बताएगा तुझे मज़हब कि कर ऐसे न कर ऐसे,
मोहब्बत इनसे कर मत भूल कर भी पास जा उनके।
हदूदे उलफत ओ नफरत धरम तुझ को बतायेगा,
अगर होगा कोई खतरा तो यह तुझ को बचायेगा।
दिखायेगा तुझे यह राहे उलफत रहनुमा होकर,
तेरी तारीकियाँ रौशन करेगा यह दिया होकर।
बढ़ाना किससे रिश्ता है, कहां तक किससे हटना है।
कहाँ बढ़ना है 'तालिब' को कहाँ उसको सिमटना है॥

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

इल्म

(आर्य समाज का नियम ९)

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

—०—

क्या तारीकी है दुनिया में ? क्या जाने क्या है अकबा में ?
क्यों जुलमत से डर आता है ? डर से इन्साँ क्यों डरता है ?
क्या होगा, क्या था, क्या जाने, जो कुछ कोई कह दे मानें।
जाहिल की किस्मत में जुलमत, आलिम की कोशिश है किस्मत।
विद्या जो न हो तारीकी हो, दुनिया की रंगत फीकी हो।
आलिम के दम से है दुनिया, जाहिल है किस्मत का हेटा।
जाहिल को अल्लाह से क्या है, हाँ आलिम को वो मिलता है।
जुलमत, तारीकी, अंधेरा, जब होता है मेरा तेरा।
विद्या से कुलफत जाती है, इज्जत और राहत आती है।
जो जाहिल है उसका दुश्मन, उसको समझो अपना दुश्मन।
विद्या के प्रकाशक बन कर,
रौशन कर दो 'तालिब' घर घर।

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उन्नति

(आर्य समाज का नियम ९)

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

—०—

अपनी ही बेहतरी हो, औरों पै बरतरी हो।
दुनिया में सरवरी हो।
शोहरत मेरी हो नौकर, दौलत मेरी हो बाँदी,
इज्ज़त मेरी हो घर घर, हर इक जगह हो चांदी,
बख्ते सिकन्दरी हो।
बाज़ार में चलूं जब, ताज़ीम उठके दें सब,
हों मुन्तज़र कि हाँ अब
होती नज़र इधर है, और हम को देखते हैं।
तकदीर की नज़र है, गोया समझ रहे हैं।
लीडर के हों सभी ढब
यह और इससे बढ़कर—हम लोग और लीडर
कहते हैं दिल में अकसर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ऐ दो जहाँ के मालिक—है अर्ज़े हाल तुझ से
मुझ को बना दे सालिक—सब पूछें राह मुझ से
अहकर को कर दे बर तर
लेकिन रवा नहीं यह—हरगिज़ बजा नहीं यह
क्या ना सज़ा नहीं यह
अपनी ही उन्नति का—ख्वाहाँ बशर हुआ है
गैरों की बेहतरी का—हाफिज़ फकत खुदा है
इबरत की जा नहीं यह
मजहब मेरा है कहता—तालिब सुनो खुदारा
औरों की उन्नति का
दिल में ख्याल रखो—और उनकी बेहतरी ही
अपनी अगर समझ लो—हो उन्नति किसी की
और काम हो तुम्हारा

(अनवारे हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आज़ादी

(आर्य समाज का नियम १०)

सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

—०—

जाती कामों में इन्सां है आज़ाद बना मुखतार हुआ।
जी चाहे वो बेशक कर ले, उसमें कब है इन्कार हुआ॥

अपनी बहबूदी की खातिर बेशक तू जो चाहे कर ले।
आखिर इससे दुनिया को क्या, कोई जी ले, कोई मर ले॥

क्यों नेकी से डरता है तू, डर क्या है अच्छे कामों में।
अकबा भी दुनिया भी मिलते हैं दोनों सस्ते दामों में॥

तुझ को कामिल आज़ादी है, कर ले जो कुछ कर सकता है।
तू अपनी धुन का पक्का रह, तुझ को क्या कोई बकता है॥

क्यों अपनी बहबूदी की खातिर, तू औरों से उलझेगा।
कोहसार पै चढ़ना है जिसको, वो क्या उससे टक्कर लेगा॥

जब तक है ज़ाती आज़ादी, आज़ादी ही आज़ादी है।
औरों को क्या इससे मतलब घर में मातम या शादी है॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

मिल्लत के कामों में लेकिन, ऐसी बातें नामुमकिन हैं।
आज़ादी मुतलिक आज़ादी जैसी बातें नामुमकिन हैं॥

मजमूई नेकी करने की, खातिर नाबाजिब दुःख देना।
लोगों को इससे क्या हासिल, दुःख के बदले में सुख देना॥

मरता हो जो कोई इससे, तो कब सच्चे सच कहते हैं।
सच कहने में जो हानि हो, चुप रहते हैं दुःख सहते हैं॥

मिल्लत की बहबूदी में अपनी आज़ादी खो जाती है।
लेकिन आखिर यह पाबन्दी ही आज़ादी हो जाती है॥

गुलशन में गुल भी काँटे भी, हर इक सू बिखरे होते हैं।
फलों से भरते हैं दामन जो आंखों वाले होते हैं।

(अनवार हकीकत)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शहीदे अकबर पण्डित लेखराम

—o—

ऐ शहनशाहे शहीदाने जहां, ऐ शहादत के दरिखशन्दा निशां।
ऐ शहीदे अकबरे हिन्दोस्तां, ऐ शहीदे आज़मे हर दो जहां।
तुझ से निखरा और भी रंगे चमन, ऐ शहादत के चमन के बाग़बां।
अल्लाह अल्लाह इस कदर काते दलील सामने तेरे मुखालिफ बे ज़ुबां।
काट दी अग़ियार की हर इक दलील, क्यों न चलती उनके दिल पर आरियां
जान देकर तूने वैदिक धर्म का, आसमां से कर दिया ऊंचा निशां।
थी अजब तासीर तेरी बात में, क्या खबर इसमें था क्या जादू निहां।
सुन के हो जाते थे दुश्मन लाजवाब, बेज़बां जैसे नहीं मुंह में ज़बां।
थी तेरी तहरीर क्या—तहरीरे बर्क, थी तेरी तकरीर क्या सैलेरवां।
क्या है कुलियाते मुसाफिर, एक बाग़, जिसमें रहती हैं बहारे बेखिज़ां।
नाम तेरा ज़िन्दाए जावेद है, काम तेरा यादगारे जाविदां।
'कामहो तहरीर का हरगिज़ न बन्द,' यह वसीयत थी तेरी ए मेहरबां।'
इस वसीयत पर करेंगे हम अमल, इसको हम समझेंगे 'तालिब' हिरज़े।

(आर्य वीर, आर्य मुसाफिर)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जीवन का राज़

(महात्मा हंसराज)

जब उठती जवानी के दिन हों, आशायें हों पअने जौबन पर,
उम्मीदों की हो भीड़ लगी उठती हो उमंगें बन ठन कर।
जब मन मन्दिर में आशाओं और अरमानों का मेला हो,
हिम्मत की लहरें उठती हों, और जोशे अमल का रेला हो।
जब उम्मीदों की रंगीं दुनियाँ, अपने पास बुलाती हो,
धनमान की देवी दयावान हो सदके सदके जाती हो।
ऐसे में रहे मन काबू में मुश्किल है कितना मुश्किल है,
लोहा तो नहीं पत्थर तो नहीं, इन्सान के पहलू में दिल है।
लेकिन ऐसे ही में अपने मन पर तूने काबू पाया था,
आशाओं, उमगों उम्मीदों को कौम की भेंट चढ़ाया था।
जाति हित के आवाहन पर, ज़ाति हित को कुर्बान किया,
आशाओं से जीवन है तूने उनका भी बलिदान दिया।
धन मान की दुनिया ठुकराई, ओहदे छोड़े दौलत त्यागी,
रातों जागा जाति के लिए, तब सोई हुई जाति जागी।
कालिज के नन्हें पौधे पर तन मन धन सब कुछ वार दिया,
सब कुछ को लगा कर बाजी तूने, विद्या का परचार किया।
तेरी हिम्मत और कोशिश ने, आशा का खोला बाब नया,
कुछ ऐसी जागरती आई, पंजाब हुआ पंजाब नया।
नामुमकिन को हिम्मत के जादू ने मुमकिन का रंग दिया,
अनहोनी बात को कोशिश ने 'होने वाली' का ढंग दिया।
निष्काम तेरी जाति सेवा ने जीवन पथ दरशाया है,
जीवन जाति अर्पण करके, जीवन का राज़ बताया है।

(आर्य गज़ट)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

"स्वामी श्रद्धानन्द"

ऐ निगहदारे सदाकत ऐ निसारे वेदे पाक,
तेरी हक़ गोई का शोहरा, तेरी जांबाज़ी की धाक।
तूने तहरीके गुरुकुल को बनाया कामयाब,
तेरी हिम्मत और निगाहे दूरबीं थी लाजवाब।
जंगे आज़ादी में तू सीना सपर होकर लड़ा,
काम भी तेरा बड़ा था, नाम भी तेरा बड़ा।
गैर मुस्लिम होके भी तू ज़ीनते मम्बर हुआ,
सर फराज़ी से तेरी हम सब का सर ऊँचा हुआ।
नाम श्रद्धानन्द था तेरा तू था मरदे जरी,
है सबक आमोज़ तेरा शेवाए मरदानगी।
याद है तू था अलील और दरपै दरमाँ थे सब,
जिन्दगी तेरी बचाने के लिये कोशां थे सब।
तू बजुंगे सिन रसीदा था बहुत बीमार था,
कातिले सफ़ाक लेकिन शातिरो ऐयार था।
प्यास, कातिल की बुझाई तूने अपने खून से,
मांग शुद्धि की सजाई तू ने अपने खून से।
तू ने अपने खून से चेहरा निखारा धर्म का,
तेरे दम से और भी चमका सितारा धर्म का।
यह हकीकत है कि था किरदार लासानी तेरा,
रहती दुनिया तक रहेगा नाम ऐ स्वामी तेरा।
जांनिसारी से मिला तुझ को शहादत का मकाम।
ऐ शहनशाहे शहीदां तुझ को 'तालिब' का सलाम।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

"महात्मा हंसराज डे"

महात्मा कहें तुझे कि तुझ को देवता कहें।
बहारे ज़िंदगी की तू ने दान कीं जवानियां ॥
जला के अपना खून ऐहतमाम नूर का किया।
कि बख्श दी हैं आबे जुए इलम को रवानियां ॥
यह कालिज और मदरसे यह नूरे इलम की तलब।
तेरे ही फैजे आम की हैं जौ फिशां निशानियां ॥
न मालोजर की आरजू, न हिर्स इज्जो जाह थी।
हकीकतें यह वह हैं जिन से मात हैं कहानियां ॥
दिये जो जोशो होश के दिलों में जल रहे हैं आज।
निगाहे नुकताबीं में हैं तेरी ही जौ फिशानियां ॥
तेरी निगाहे खास से निगाहे बे गरज़ मिली।
गरज़ से बे नियाज़ हैं हमारी खुश बियानियां
ज़हे नसीब हम को तेरी याद का शरफ़ मिला।
ज़हे नसीब कह रहे हैं हम तेरी कहानियां ॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

श्री मेहरचन्द महाजन की याद में

(आर्य जाति के एक अनथक सेवक रिटायर्ड चीफ जस्टिस सुप्रीम कोर्ट)

हो गई बेकार फ़रते ग़म से गोयाई मेरी,
खो गई खामोशियों में नग़मा पैराई मेरी।
हो गए कुछ और मबहम मानीए सबरो करार,
हो गई कुछ और रुसवा नाशकेबाई मेरी।
वह कि जिसकी ज़ात में यकजा थे मेहरो माहताब,
वह कि जिसके फैज़ का हासिल है बीनाई मेरी।
वह कि था जिससे पढ़ा मैं मैंने सबक कानून का,
हो गई आसान जिससे जादा पैमाई मेरी।
था दिले नौशेरवां जिसका, अरस्तू का दिमाग़,
फख़्र है मुझको कि थी उससे शनासाई मेरी।
तज़करे थे जिसकी दानिश के दियारे हिन्द में,
मोतरिफ़ थी जिसकी दानाई की दानाई मेरी।
वह मुफ्फकर, कर्मयोगी, रहनुमाए पुख्ताकार,
जिसकी पीरी पर भी थी कुर्बान बरनाई मेरी।
खिज़रे राह था वह कि जिसकी रहनुमाई के तुफैल,
सरफराज़ी से इबारत है जबीं साई मेरी।
सर झुका जाता है 'तालिब' आज उसकी याद में,
मोजज़न बहरे अकीदत है दिले नाशाद में।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आनन्द स्वामी जी के परलोक गमन पर

मुस्कान रही होठों पै तेरे-जीते जी भी मरते दम भी,
खुशियों के तकाजे भी झेले, तूफाने हवादस के गम भी।
खुशहाल रहा हर हाल में तू, खुरसन्द रहा आनन्द रहा,
घर बार की खुशियाँ भी देखीं, देखा संन्यास का आलम भी।

लगभग सौ साल की आयु तक जन जीवन का संचार किया,
अज़्म और अमल के जादू से आशाओं को साकार किया।
उपदेश दिया हर हाल में खुश रहने का ग़म के मारों को,
चिन्ता से पीड़ित लोगों के जीवन पथ को हमवार किया।

रस कानों में टपकाती थी लय तेरी मीठी वाणी की,
शीरीनी उसमें शहद की थी और शीतलता थी पानी की।
तेरे किरदार की वेदी पर वह फूल चढ़ाए हैं उसने,
जो फूल चुने थे 'तालिब' ने जब तूने गुल अफशानी की।

(रिफार्मर, दिल्ली)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शाने समाज

(मुशायरा बतकरीब सालाना जलसा आर्य समाज पैशावर छावनी)

—•—

जज़्बाए ईसार है, बुनियादे ईवाने समाज,
बेख़तर शरहे हकीकत, शरहे ईमान ए समाज।
मुर्दा भारत के बदन में रूह ताज़ा फूंक दी,
हद्दे इमकां से परे है हद्दे इमकान ए समाज।
हिम्मत ए मर्दां ने नामुमकिन को मुमकिन कर दिया,
कोशिशे पैहम से है तकमीले पैमान ए समाज।
राहे हक में सर फरोशी का सबक उसने दिया,
गुल बदामाँ हो गई खाके गुलस्ताने समाज।
उसके जादू ने दिया हमको शहीदों का जिगर,
सर बकफ, सीना सपर, हर, मर्दे मैदान ए समाज।
अल्लाह अल्लाह बहरे हस्ती में यह गौहर खेज़ियान,
जोश पर आया हुआ है अबरे नैसाने समाज़।
इसके हर इक़ लाल से लाले बदखशां शर्मसार,
गैरते दुर्रे अदन हर गौहरे काने समाज।
महर्षि के फैज़ से और वेद के अनवार से।
हैं मुनव्वर सीना हाए नुक्ता संजाने समाज,
इसके फैज़ाने नज़र ने मिस को कुन्दन कर दिया।
मुश्किलों से और भी 'तालिब' बढ़ी शाने समाज॥

(रिफार्मर, लाहौर)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

स्वामी जी से गुजारिश

आ देख ज़रा हम लोगों को क्या कहते हैं क्या करते हैं।
कहने को ईश्वर के प्रेमी, लेकिन दुनिया पर मरते हैं॥
पब्लिक के सेवक हैं लेकिन, है ज़ोम के ओहदादार हैं हम।
नादारों में नादार हैं हम ज़रदारों में जरदार हैं हम॥
उफ़ हम लोगों ने धर्म के बन्धन कितने ढीले कर डाले।
उफ ज़रदारों ने सत्य के मुंह पर डाल दिये ज़र के ताले॥
था हुकम तेरा सहते जाओ तुम जौरोसितम और काम करो।
जीवन का नाम तपस्या है जीते हो तो क्यों आराम करो॥
पैसे के लालच में आकर हम क्या क्या ढोंग रचाते हैं।
भगवान के नाम पै चन्दा लेकर, दान का धन खा जाते हैं॥
जनता को धोखा देते हैं और मुफ्त का माल उड़ाते हैं।
भगवान को चकमा देने की तदबीरों पर इतराते हैं॥
भगवान को धोखा देने वाले खुद ही धोखा खायेंगे।
जब पाप का भाण्डा फूटेगा सैलाब में वो बह जायेंगे॥
आ देख ज़रा हम लोगों को, ऐ वेदों वाले स्वामी आ।
फिर ज्ञान ध्यान के राज़ बता, फिर वेदों का फरमान सुना॥
भारत को जगाया था तूने अब फिर यह सोया जाता है।
करवट तो बदल ली है लेकिन फिर नींद में खोया जाता है॥
धन धर्म का साधन होता था अब धर्म भी धन का साधन है।
अब रिश्ते नाते धन के हैं अब धन ही प्रेम का बन्धन है॥
फिर सत प्रकाशक स्वामी आ मोह मायाजाल उड़ा आकर।
भारत को जगाया था तूने, इस बन्धन से भी छुड़ा आकर॥

(आर्य गज़ट, रिफार्मर)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आर्य समाज ! जाग

जगा कर सब को तू खुद सो गया है, यह बेदारी की अच्छी है निशानी।
तू माहवे ख्वाबे ग़फ़लत हो गया है, जगाने की तुझे मैंने है ठानी॥
जगाकरतुझको दम लूंगा जगा कर, मैं हरगिज़ तुझ को फिरसोने नदूंगा
जगाऊँगा तुझे शाने हिलाकर, तुझे बेहोश यूं होने न दूंगा॥
है जड़ कमजोरियों की ज़र परस्ती, रवा कर दी है तूने ज़र को पूजा।
न कायम रह सकेगी तेरी हस्ती, अगर इस राह को तूने न छोड़ा॥
तेरे घर में हैं ज़रदारों को चाँदी, गरीबों का कोई पुरसाँ नहीं है।
बना बैठे हैं यह ओहदों को गद्दी, तगयुर का कोई इमकां नहीं है॥
न कैरेक्टर, न कुर्बानी न विद्या, न वैदिक धर्म की दिल में लगन है।
नहीं मालूम क्या होती है सन्ध्या, नहीं मालूम क्या होता हवन है॥
कभी वेदों की सूरत तक न देखी, इन्हें पढ़ने पढ़ाने से गरज़ क्या।
कभी उपकार की हाजत न समझो, अमीरों को भला ऐसे मरज़ क्या॥
यह काबिज हो गए हैं मसनदों पर इन्हें मरगूब है यह सर फराजी।
तवंगर हैं हकूमत के गदागर, यह घर बैठे ही बन बैठे हैं गाज़ी॥
छुड़ा ले इनसे दामनकरके हिम्मत, खसायल को परस्तिशफिर रवा कर।
तेरा ईमान है बहबूदे खलकत, भला कर सारी दुनिया का भला कर॥
जगाने को यह शब मौजू तरीं है, यह शब है जागने को बेहतरीं शब।
यह शिव की रातहै ! कितनी हसीं है, न जागा आज तो जागेगा फिर कब
इसी शब को था जागा मूल शकर, वहजागा और दुनिया को जगाया।
इसी शब जागना है तुझको बेहतर, हुआ जाता है अपना घर पराया॥
मेरी बातें तुझे कड़वी लगेंगी, कि है रंगे हकीकत इनं पै गालिब।
बहुत मुमकिनहै नश्तरसी चुभेंगी, चुभें, मैं हूं तेरी सेहतका 'तालिब'॥

(प्रताप, रिफार्मर)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

सोशल सुधार

नाज़ुक से दिल को चीर गई नोक खार की,
लीडर को फ़िक्र खा गई सोशल सुधार की।
है फ़िक्र ही तो मौत सकून ओ करार की,
तकरीर उसने फिर भी बड़ी जोरदार की॥

फरमाया "हम तो शोरे कियामत मचा चुके,
किस्से तबाहियों के हजारों सुना चुके।
मैदाने दार ओ गीर के नकशे दिखा चुके,
लेकिन न तुमने राह नई इखत्यार की॥

अब तक वही फज़ूल रिवाजों का ज़ोर है,
अब तक वही फज़ूल सी रसमों का शोर है।
दुनिया का ढंग और चलन अपना और है,
आदत ही तुमने छोड़ दी सोच और विचार की॥

तकरीर सुन चुके तो सुख्न गर को देखिए,
हिर्सो फरेब ओ मकर के पैकर को देखिए।
झूठों के बादशाह के तेवर को देखिए,
तकरीर दिल फरेब है चारों के यार का॥

लड़के की हो सगाई तो जो भर के लेंगे आप,
लेने का नाप और है देने का और नाप।
सब कुछ रवा है आपको क्या पुण्य और पाप,
तखसीस न रवा है, यहाँ नूर ओ नार की॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

माना कि ग़मनसीब के ग़म खार आप हैं,
माना कि दिल फ़गार के दिलदार आप हैं।
माना कि बेनवा के मददगार आप हैं,
और आप ही को फ़िक्र है सोशल सुधार की ।।

कुछ फ़िक्र भी है देश की हालत हुई है क्या,
कुछ फ़िक्र भी है कौम को घुन क्यों है लग गया।
कुछ फ़िक्र भी है हाल हमारा यह क्यों हुआ,
क्यों है खिजां के हाथ में किसमत बहार की ।।

ख़ौफे बशर नहीं है तो खौफे ख़ुदा करो,
इस नीम जाँ समाज पै कुछ तो दया करो ।
जो कर सको ज़बां से वुही कुछ कहा करो;
कुछ फ़िक्र भी तो चाहिए अपने वकार की ।।

है लुत्फ जबकि अपने ही घर से हो इब्तदा,
वह क्या तबीब खुद को जो अच्छा न कर सका।
ज़ौके अमल हो साथ तो भाषण का है मजा,
बातों से बात बन न सकेगी सुधार की ।।

जो कुछ कहो वह करके दिखाओ तो बात है,
किरदार ही से वकअत ओ शाने हयात है।
"तालिब" यही तो राज़ ए बका ओ सबात है,
बुनियाद है यह कौम के इज़ ओ वकार की ।।

(रिफार्मर)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आर्य समाज की स्थापना का जशने सद साला
(शताब्दी दिवस)

(७ अप्रैल १८७५ को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी)

सौ बरस हाँ सौ बरस पहले की बात,
आ गई है खुद ब खुद होठों पै आज।
सातवीं तारीख थी अप्रैल की,
बम्बई में जब हुआ कायम समाज॥

स्वामी जी ने खुद लगाया था जो पेड़,
और किया तजवीज़ नाम आर्य समाज!
रफ्ता रफ्ता बन गया यह वह शिजर,
जिसका साया है तपे ग़म का इलाज॥

ऐसा जो पौधा लगा पंजाब में,
सबसे बढ़ कर वह फला फूला वहां।
उसने काया ही पलट दी देश की,
बन गया भारत जो था हिन्दोस्तां॥

खुल गए कालिज, गुरुकुल मदरसे,
इलम सी शै की फरावानी हुई।
लड़कियों को भी मिला पढ़ने का हक,
दूर नादानों की नादानी हुई॥

फिर अकीदत अकल की सुनने लगी,
काम फिर करने लगे ज़हनो दिमाग़।
वेद का प्रचार फिर होने लगा,
फिर तरो ताज़ा हुआ वहदत का बाग॥

हमने पहली बार यह नारा सुना,
हो बुरा तो भी भला है अपना राज।
हुकमरानी गैर की अच्छी नहीं,
ग़ैर के सर पर हो क्यों भारत का ताज॥

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

इस नई तहरीक से हुब्बे वतन,
कौम के अफ़राद में पैदा हुआ।
आग आज़ादी की रौशन हो गई,
रफ्ता रफ्ता यह शरर शोला हुआ ।।

हो गया आज़ाद आख़िर अपना देश;
ख्वाब स्वामी जी का पूरा हो गया।
सब से पहले किस को थी यह कल्पना,
आज भारत वर्ष है भूला हुआ ।।

कर दिया जो हो सका सौ साल में,
अब नए सौ साल की है इब्तदा।
अहदे नौ की है चुनौती भी नई,
मुश्किलें ताज़ा तरीं चैलेंज नया ।।

इस नए चैलेंज को करना है कबूल,
फिर तेरी हिम्मत का होगा इम्तिहाँ।
घूरता है देव हिर्स ओ आज़ का,
दायमी इकदार की लब पर है जां ।।

जशने सद साला मुबारिक हो तुझे,
महर्षि का तप हो तेरा रहनुमा।
हर बुराई को पछाड़े तेरा अज़म,
हर अंधेरे में हो तू रौशन दिया ।।
तेरा मसलक हो हर इक की आफ़ियत,

खेश हो या गैर हो सब का भला।
फैज़ पायें सब तेरी तालीम से,
हों तेरे 'तालिब' हकीकत आशना ।।

(आर्य गज़ट, रिफार्मर, रहनुमाए तालीम, बर्गेजर्द)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शूरवीरों की कौम

जिस कौम के बच्चे अपने प्यारे धर्म पै कटते मरते हों
जिस कौम के बच्चे अपने धर्म पै जां देने से न डरते हों
जिस कौम के बच्चे हर दम अपने धर्म ही का दम भरते हों
जिस कौम के बच्चे धर्म की खातिर प्राण न्यौछावर करते हों
वो कौम है योद्धा वीरों की या शूरवीर रणधीरों की

जिस कौम का था इक बालक वीर हकीकत धर्म का शैदाई
जिस कौम की खातिर उसने अपनी गर्दन शौक से कटवाई
शैदाये हिन्दू धर्म रहा मरकर भी उसका अनुयाई
जिस कौम पै मरकर हुआ अमर दी जान और कौम में जान आई
वो कौम है योद्धा वीरों की या शूरवीर रणधीरों की

दशमेश के प्यारे बच्चे दोनों चुने गए दीवारों में
सर धर्म की खातिर देकर वो सरदार हुए सरदारों में
वो कौम के गुलशन में हैं जैसे फूल हों लाला जारों में
जिस कौम पै मरने वाले ये मुमताज हैं कौम के प्यारों में
वो कौम है योद्धा वीरों की या शूरवीर रणधीरों की

जिस कौम ने ऐसे शेर बहादुर बच्चे गोद में पाले हों
जिस कौम के बच्चे अपने धर्म की खातिर मरने वाले हों
जिस कौम के बच्चे कौमो हित के शैदा हों मतवाले हों
जिस कौम के बच्चे धर्म और देश के रक्षक और रखवाले हों
वो कौम है योद्धा वीरों की या शूरवीर रणधीरों की

(आर्य गज़ट, लाहौर)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आर्य समाज के सम्बन्ध में कुछ महान् आत्माओं के विचार

'मेरा सादर प्रणाम उस गुरु दयानन्द को है, जिसका उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था। उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। आधुनिक भारत के मार्ग दर्शक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती को मैं सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।'

—महाकवि रवीन्द्र नाथ टैगोर

'महर्षि दयानन्द हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में और श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत अधिक पड़ा है।'

—महात्मा गांधी

'स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया।'

—नेता जी सुभाषचन्द्र बोस

'ऋषि दयानन्द ने उन द्वारों को कुन्जी प्राप्त की है जो युगों से बन्द थे और उसने पटे हुये झरनों का मुख खोल दिया।'

—योगी अरविन्द घोष

'स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। वह मेरे धर्म के पिता हैं और आर्य समाज मेरी धर्म की माता है।'

—पंजाब केसरी लाला लाजपत राय

'गुजरात ने संसार को जो महापुरुष प्रदान किये हैं उनमें महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी दोनों ने ही मानवता की सेवा में अपना सर्वस्व लगा दिया। इसलिये कि वे भारत ही नहीं संसार की विभूति हैं, जनता का कर्त्तव्य है कि उपयुक्त दोनों महापुरुषों की शिक्षाओं पर ध्यान दें और तदनुसार ही उनका आचरण करें।'

—सरदार वल्लभ भाई पटेल

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri